सुबुद्धि–कुबुद्धि

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मानव शरीर के भीतर बुद्धि का महत्वपूर्ण स्थान है। बुद्धि निर्णय करती है। मन्द बुद्धि, मध्यम बुद्धि और तीव्र बुद्धि तीन प्रकार के बुद्धि होती है। पुण्योदय के परिणाम स्वरूप तीव्र बुद्धि प्राप्त होती है। बुद्धि मन से प्राप्त विकल्पों पर विचार करके चुनाव करती है। बुद्धि का मुख्य कार्य निर्णय करना होता है। इन्द्रिय जगत् मनोरंजन का जगत् है और इन्द्रियातीत जगत आत्मरंजन का जगत् है। कुबुद्धि राग–द्वेष पैदा करती है और सुबुद्धि सकारात्मक चिंतन देती है। कुबुद्धि भटकाती है। कुबुद्धि के द्वारा बुरा मार्ग चुना जाता है और सुबुद्धि के द्वारा सन्मार्ग चुना जाता है। सुबुद्धि सत्य का मार्ग है। जो सत्य पर चलता है उसकी विजय होती है। इसीलिए कहा गया है **सत्यमेव जयते**।

रावण कुबुद्धि का प्रतीक था और श्रीरामचन्द्रजी सुबुद्धि के प्रतीक थे। कुबुद्धि आने पर चिंतन नकारात्मक हो जाता है और व्यक्ति गलत कार्य करने लगता है। उसको परामर्श देने वाले भी उसी की बुद्धि के अनुसार उसे परामर्श भी देते हैं। रावण ने जब सीता का अपहरण किया तो उसके पुत्रादि सभी ने उसके चिंतन से सहमति दिखाई। उसका मामा मारीच सीता अपहरण में सोने के मृग का रूप धारण करके श्रीरामचन्द्रजी को बहुत दूर ले गया और रावण साधु का भेष बनाकर असाधु कार्य किया। सीताजी का अपहरण करने के बाद उसने उन्हें बहुत त्रास दिया। भगवान राम के दूतों ने और उसके भाई विभीषण ने भी उसे समझाने का बहुत प्रयास किया किन्तु कुबुद्धि के कारण वह उन लोगों की बात नहीं माना जिसका परिणाम हुआ सम्पूर्ण रावण कुल का विनाश। कुबुद्धि विनाश ही कराती है। रावण के कुल में कोई नहीं बचा।

इसी प्रकार राक्षस राज हिरण्यकशिपु भी कुबुद्धि का प्रतीक था। अपने पुत्र प्रह्लाद को सन्मार्ग से हटाने के लिए उसने उसे अनेक यातनाएं दीं। किन्तु प्रह्लाद सुबुद्धि के प्रतीक थे। उन्होंने हिरण्यकशिपु की बात नहीं मानी और अनेक कष्टों को सहकर भी सन्मार्ग का ही वरण किया।

प्रह्लाद राक्षस कुल में उत्पन्न होने के बावजूद भी भगवत प्रेमी थे। हिरण्यकशिपु उन्हें राक्षसोचित शिक्षा देकर शक्ति सम्पन्न बनाना चाहता था किन्तु उनका मन भगवत चरणारविन्द में रमा हुआ था। इसलिये उन्हें उसकी शिक्षा अपने वश में न कर सकी। प्रह्लाद यों तो सबसे छोटे थे, परन्तु गुणों में सबसे बड़े थे। वे बड़े संतसेवी थी। सौम्यस्वभाव, सत्यप्रतिज्ञ एवं जितेन्द्रिय थे तथा समस्त प्राणियों के साथ अपने ही समान समता का बर्ताव करते और सबके एकमात्र प्रिय और सच्चे हितैषी थे। बड़े लोगों के चरणों में सेवक की तरह झुककर रहते थे। लोक–परलोक के विषयों को उन्होंने देखा–सुना तो बहुत था, परन्तु वे उन्हें निःसार और असत्य समझते थे। इसलिये उनके मन में किसी भी वस्तु की लालसा न थी। इन्द्रिय, प्राण, शरीर और मन उनके वश में थे। उनके चित्त में कभी किसी प्रकार की कामना नहीं उठती थी। जन्म से असुर होने पर भी उनमें आसुरी सम्पत्ति का लेश भी नहीं था।

जैसे भगवान के गुण अनन्त हैं, वैसे ही प्रह्लाद के श्रेष्ठ गुणों की भी कोई सीमा नहीं है। महात्मा लोग सदा से उनका वर्णन करते और उन्हें अपनाते आये हैं। तथापि वे आज भी ज्यो के त्यों बने हुए हैं। यों तो देवता उनके शत्रु हैं, परन्तु फिर भी भक्तों का चरित्र सुनने के लिये जब उन लोगों की सभा होती है, तब वे दूसरे भक्तों को प्रह्लाद के समान कहकर उनका सम्मान करते हैं। फिर आप जैसे अजातशत्रु भगवद्भक्त उनका आदर करेंगे इसमें तो सन्देह ही क्या हे। उनकी महिमा का वर्णन करने के लिये अगणित गुण के कहने–सुनने की आवश्यकता नहीं। केवल एक ही गुण भगवान के चरणों में स्वाभाविक, जन्मजात प्रेम उनकी महिमा को प्रकट करने के लिये पर्याप्त है।

प्रह्लाद बचपन में ही खेल–कूद छोड़कर भगवान् के ध्यान में तन्मय हो जाया करते। भगवान् अनुग्रहरूप ग्रह ने उनके ह्रदय को इस प्रकार खींच लिया था कि उन्हें जगत की कुछ सुध बुध ही नहीं रहती। उन्हें ऐसा जान पड़ता कि भगवान मुझे अपनी गोद में लेकर आलिंगन कर रहे हैं। इसलिये उन्हें सोते–बैठते, खाते–पीते, चलते–फिरते और बातचीत करते समय भी इन बातों का ध्यान बिल्कुल न रहता। कभी–कभी भगवान मुझे छोड़कर चले गये, इस भावना

में उनका हृदय इतना डूब जाता कि वे जोर–जोर से रोने लगते। कभी मन ही मन उन्हें अपने सामने पाकर आनन्दोद्रेक से ठठाकर हंसने लगते।

कभी उनके ध्यान के मधुर आनन्द का अनुभव करके जोर से गाने लगते। वे कभी उत्सुक हो बेसुरा चिल्ला पड़ते। हिरण्यकशिपु ने पिता होकर भी ऐसे शुद्ध हृदय महात्मा पुत्र से द्रोह किया। पिता तो स्वभाव से ही अपने पुत्रों से प्रेम करते हैं। यदि पुत्र कोई उलटा काम करता है, तो वे उसे शिक्षा देने के लिये ही डांटते हैं, शत्रु की तरह वैर–विरोध तो नहीं करते। जिसका चिंतन सकारात्मक रहता है उसी की बुद्धि सुबुद्धि होती है। कुबुद्धि वाले व्यक्ति का चिंतन भी नकारात्मक रहता है। कुबुद्धि के कारण मनुष्य की बुद्धि सही दिशा में चिंतन ही नहीं कर पाती। उसे बुरा मार्ग ही अच्छा लगता है। अहंकार की प्रधानता के कारण उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।